International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 314-316

राजनीति में नैतिकता एवं अध्यात्मिकता की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता

अमित कुमार सिंह

शोध छात्र, राजनीतिविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

जहाँ तक नैतिकता और आध्यात्मिकता जैसे सार्वभौम मूल्यों का प्रश्न है उन पर विश्व के किसी भी देश में, किसी भी काल में और किसी भी प्रकार के राजनीतिक सामाजिक और शासकीय व्यवस्था में प्रश्न चिह्न न तो भूतकाल में लगाया जा सकता था और न ही वर्तमान और न ही भविष्य में उनकी उपयोगिता पर कभी कोई संदेह किया जा सकता है। संपूर्ण प्राचीन भारतीय जीवन आध्यात्मिकता और नैतिकता जैसे मूल्यों से न्यूनाधिक मात्रा में प्रभावित रहा है। परन्तु राजनीति में नैतिकता और आध्यात्मिकता को अपनाया जाय या समाहित किया जाय यह विद्वानो के लिए एक विचारणीय बिन्दु हो सकता है और यही कारण है कि समय–समय पर विभिन्न देशो के विद्वानो ने उक्त मूल्यों को राजनीति में प्रासंगिकता पर भिन्न–भिन्न परस्पर विरोधी मत व्यक्त किये है।

मूल शब्द : नैतिकता, आध्यात्मिकता।

प्रस्तावना

नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का वैचारिक पक्ष

विश्व राजनीतिक परिदृश्य में सर्वप्रथम पाश्चात्य दार्शनिकों में सुकरात ने अपना सारा जीवन तत्व–चिंतन और दार्शनिक विचार विमर्श में व्यतीत किया।[1] उसने नागरिक की तरह विभिन्न पदो पर रहकर राज्य की सेवा की और उसकी तरफ से युद्धो में भी भाग लिया। उसके जीवन का मूल तंत्र दृढ़ता से नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करना था। यद्यपि उसने नागरिक कर्त्तव्यों का कभी उलंघन नही किया तथापि शासकों के ऐसे अदेशो को मानने से इनकार कर दिया जो नैतिक मान्यताओं के विरूद्ध थे। अपने विवेक के अनुसार कार्य करने का नैतिक साहस रखना उसकी सबसे बड़ी विशेषता थी।

इसी क्रम में पाश्चात्य विचारक प्लेटो और अरस्तू का उल्लेख प्रासंगिक है। प्लेटो राजनीतिशास्त्र को नीतिशास्त्र का ही अंग मानता था दूसरे शब्दों में अफलातून ने नीतिशास्त्र को राजनीतिशास्त्र पर प्रधानता दी राजनीति को उसने नीतिशास्त्र रूपी वृक्ष की शाखा मात्र माना अतः आलोचको ने यह मत व्यक्त किया कि प्लेटो के अनुसार सम्पूर्ण राजनीति नैतिकता पर आधारित होनी चाहिए।[2] परन्तु इसके विपरीत अरस्तू विश्व का प्रथम विचारक था जिसने राजनीतिशास्त्र को नैतिकता से पूर्णतः पृथक कर दिया। उसने स्पष्ट घोषणा की, कि दोनों विषय स्वयत्त हैं। अतः नैतिकता के सिद्धान्त को राजनीतिशास्त्र में मान्यता नही दी जा सकती है सम्भवतः राजनीतिशास्त्र से नीतिशास्त्र का पृथक ही अरस्तू को राजनीतिशास्त्र का पिता घोषित करने का एक प्रमुख कारण था। परन्तु आलोचको की यह धारणा है कि राजनीति का नीतिशास्त्र से पृथक्करण अरस्तू के राजनीतिक चितंन का एक संयोग मात्र था जिसे जानबूझकर नही बल्कि मात्र संयोगवश अपनाया गया था।[3] "Sepration of politics from ethics was accidental and it was not deliberate effort on the part of Aristotle."

राजनीति के क्षेत्र में सर्वप्रथम मार्सिलियों ने धर्मनिरपेक्ष विचारधारा का प्रतिपादन किया था परन्तु वह धर्म को राज्य से पृथक नही करता है। अन्य मध्ययुगीन विचारकों ने भी किसी न किसी रूप में धर्म व राजनीति को संयुक्त माना है।[4] धर्म और नैतिकता पर राजनीतिशास्त्र में सबसे पहले और स्पष्ट रूप से राजनीति से धर्म और नैतिकता को पृथक करने वाले सिद्धान्त को प्रतिपादित करने का श्रेय मैकियावली को प्राप्त है।[5] मैकियावली के चिंतन का मुख्य लक्ष्य राज्य का संरक्षण और उसका विस्तार करना है। जबकि नैतिकता का उद्देश्य मनुष्य का नैतिक विकास करना है। अतः उद्देश्य की इस भिन्नता के कारण ही राज्य और व्यक्ति को एक स्तर पर नही रखा जा सकता है। अतः वह कहता है कि राज्य किसी नैतिकता को नही जानता जो कुछ वह करता है, वह न तो नैतिक है और न ही अनैतिक, प्रत्युत वह नैतिकता निरपेक्ष है।

नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का भारतीय पक्ष

भारतीय राजनीतिक दर्शन में धर्म और नैतिकता को राजनीति में अटूट संबंध की स्थापना का श्रेय महात्मा गाँधी को जाता है। उन्होंने राजनीति को उपर उठाकर निःस्वार्थ लोक सेवा तथा नैतिकता के स्तर पर रखा। गाँधी जी की दृष्टि में राजनीति धर्म और नैतिकता की एक शाखा थी, अतः उन्होंने राजनीति को शक्ति एवं संघर्ष प्राप्त करने के लिए नही माना है। गांधी जी का विचार था कि राजनीति का अर्थ है जन सेवा अथवा जनकल्याण और उन्होने यह तर्क रखा कि किसी भी प्रकार का जनकल्याण अथवा लोकहित अनैतिक और गैर आध्यात्मिक मार्ग अपनाकर नही किया जा सकता अतः गांधी जी ने राजनीति में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्रासंगिक माना।[6]

इसी विचार के कारण गाँधी जी अन्य विचारकों से अलग है और हम यह सोचने के लिए बाध्य हो जाते है कि गाँधी जी की समाज के प्रति क्या अंतरदृष्टि थी और उनका मानना था कि साध्य की प्राप्ति साधन, शुद्ध साधनो से ही हो सकती है। गाँधी जी ने नैतिक मूल्यों का निर्धारण किया। गाँधी जी ने धर्म और राजनीति को मिलाने के लिए काफी अथक प्रयास किये। उनका दृढ़ विश्वास था कि धर्म व्यक्ति की नैतिक मूल्यों व नैतिक सिद्धान्तों के प्रति प्रेरित करता है और उस मार्ग की दिशा दिखाता है जो नैतिक रूप से उचित है। जब धर्म का राजनीति में समावेश किया जाता है तब इसके व्यापक परिणाम सामने आते है। जब चारो तरफ

नैतिक मूल्य छा जाते है, तब राजनीति में शामिल व्यक्ति इस योग्य हो जाता है कि वह अपने संगी, साथियों की भलाई के लिए कार्य करे। गाँधी जी ने सत्य की भावना में विश्वास प्रकट किया है और यह धार्मिक स्त्रोतों से निकलती है। गाँधी जी ने धर्म और राजनीति में कोई अंतर नही किया, उन्होंने अधिकतम लोगों के अधिकतम भलाई या अन्य शब्दों में सर्वोदय या अन्तोदय को सुनिश्चित करने के लिए धर्म और राजनीति को एक करने की बात कही है।

वर्तमान युग में नैतिकता और आध्यात्मिकता का अभाव है और जहाँ भ्रष्टाचार को मान्यता मिल गई है या यह जीवन एक मार्ग बन गया है, ऐसे में राजनीति में गाँधी जी का नैतिक परिप्रेक्ष्य आश्चर्यजनक और रूचिकर लगता है। परन्तु गाँधी जी ने इन दोनो को एक करने का दृढ़ विश्वास ही गाँधी जी को एक जन नेता बना दिया।

वर्तमान की वस्तुस्थिति

नैतिकता के नजरिये से देखे तो परमाणु हथियारों के बारे में स्टेवन ली ने काफी कुछ कहा है। उनका मानना है कि परमाणु हथियार हमारे नैतिक समझ के लिए बुनियादी समस्या खड़ी करते है। परमाणु हथियार की बेहद विनाशकारी शक्ति उन्हे हमारी नैतिक दुनिया से अलग खड़ा करती है। इस पृष्ठभूमि में एक वर्ग आक्रमण के नैतिक पहलू का विश्लेषण करेगा, वह भी न्यायसंगत युद्ध के सिद्धान्त के आधार पर। न्यायसंगत युद्ध का सिद्धान्त युद्ध की नैतिकता का सबसे व्यापक स्वीकृत सिद्धान्त है। युद्ध की सीमाओं से परे जाकर यह गैर मानव और गैर राजनीतिक गतिविधि बन जाता है। यह वह स्थिति होती है जब सैन्य बल विवेकहीन हो जाता है और हिंसा व हथियार का बेहिसाब प्रयोग करता है। हालाँकि युद्ध का सिद्धान्त अंधाधुंध युद्ध से अनिष्ट को रोकता है। फिर भी युद्ध के अपने नियम होते है।

जेनेवा अनिसमय 1949 युद्ध के दौरान युद्धरत राष्ट्रो पर अनेक वैचारिक और नैतिक कर्त्तव्यों का उल्लेख करते है। दूसरे शब्दों में युद्ध में भी नैतिक नियमो की अनुपालना आवश्यक है। कौरव–पांड़व सांयकाल एक दूसरे के कैम्पों में जाकर एक दूसरे के कुशलक्षेम पूछते थे। इसी प्रकार टी0 एच0 ग्रीन ने युद्ध को निषिद्ध किया क्योंकि यह मनुष्य के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अधिकार जीवन के अधिकार का उलंघन करता है।

नागरिक समाज और सेना के बीच संबंध भी होता है। इस बात से इंकार नही किया जा सकता है। फिर भी सेना और नागरिक समाज के बीच युद्ध के समय अंतर रहना जरूरी होता है जो पूरी तरह से राजनीतिक नैतिकता और राजनीतिक कारण नही खो चुके होते है वे इसका चयन जरूर करते है। नैतिकता अध्ययन का एक ऐसा इलाका है। जिसका उन विचारों से रिश्ता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा व्यवहार। दर्शन की एक शाखा जिसका इससे रिश्ता है कि नैतिक रूप से क्या सही है और क्या गलत हैं। बी बी सी नैतिक गाइड के अनुसार नैतिकता, नैतिक सिद्धान्तों की एक व्यवस्था उसके सबसे सरल रूप में, लोग जिस तरह से व्यवहार करते है और अपने जीवन को जीते है वो इसको प्रभावित करता है। नैतिकता को इस बात से आशय है कि क्या व्यक्ति और समाज के लिए अच्छा है और उसे नैतिक दर्शन के रूप में परिभाषित किया जाता है। इस तरह नैतिकता विभिन्न दुविधाओं को कवर करते हुए धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपराओं से तय होती है।

नैतिक सिद्धान्त व्यवहार में उपयोगी हो जाते है तो उन्हें मानव व्यवहार को प्रभावित करने की जरूरत है। इस परिप्रेक्ष्य में यह तर्क दिया जाता है कि अगर कोई इंसान इस बात को महसूस करता है कि कोई चीज करना नैतिक तौर पर अच्छा है तब उसे नही करना उस इंसान के लिए अतार्किक होगा। अतः नैतिकता से आशय सभी के साथ एक साफ सुधरा व्यवहार सभी परिस्थितियों में। जैसा कि जीसस क्राइस्ट ने कहा था कि दूसरो के साथ वही व्यहार करना चाहिए जो आप अपने साथ चाहते है। यही बात गाँधीवादी दर्शन के साथ भी है। इसी तरह से महाभारत का शांतिपर्व और प्लेटो का फिलास्फर किंग शासको के नैतिक आचरण पर जोर देता है।

वह जो करणीय है

यह एक नियम एव सिद्धान्त मुहैया कराती है जो नैतिक समस्याओं का एक बड़ा विचार लेने के लिए हमे सक्षम बनाता है। इसलिए नैतिकता हमे नैतिक विकल्प मुहैया कराती है जो एक तरह का ढ़ाँचा जिसे कठिन परिस्थितियों में रास्ता हासिल करने के लिए उसका इस्तेमाल कर सकते है। गाँधी के दर्शन का समग्र विचार चरित्र निर्माण, व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता और साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ाने वाली शक्तियों के इर्दगिर्द घूमता है। गाँधी जी के लिए नीतिशास्त्र, नैतिकता, सद्गुण, मूल्य, धर्म और आध्यात्मिकता के बीच कोई रेखा नही खीची जा सकती। ये सब हमारे जीवन के ढ़ंग व तरीके से जुड़े हुए है– ''मै नही मानता कि आध्यात्मिक नियम अपने क्षेत्र में ही काम करता है.....सामान्य गतिविधियों में भी इस नियम की अभिव्यक्ति होती है।

नैतिकता दूसरे लोगो, समाज के हितो की चिंता करती है आखिरी अच्छाई लक्ष्य के साथ यह अलग–अलग लोगों के लिए अलग–अलग हो सकती है इसलिए जब एक इंसान नैतिक तौर पर सोचता है तो वह अपने से अलग कुछ विचार दे रहा होता है। सरकार के नैतिकता की अवधाराणात्मक बनाया गया है क्योंकि राज्य और सरकार की अवधारणा बहुत पुरानी हो गई है। आजकल पूरी दुनिया में शासन की अवधारणा चारो तरफ प्रचलन में है। सम्राट अशोक भी लोगो को राज्य और उसके विषयों के प्रति जबावदेही बनाता है। उसी तरह से अशोक भी लोगो को राज्य और उसके विषयो के प्रति लोगो की जिम्मेदारी का अहसास कराता है। उसने आध्यात्मिकता की सच्चाई का लोकतंत्रीकरण किया है।

उपसंहार

राजनीति का सत्य, अहिंसा और साधनो की पवित्रता द्वारा आध्यात्मिकरण करके अन्याय और निरंकुशता का सत्याग्रह द्वारा सामना करके एक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन का योग एवं समन्वय करने का प्रयत्न किया तथा एक प्रभावकारी लोकतंत्र की स्थापना कर उन्होंने न्याय और समानता पर आधारित समाज की नींव डालकर विश्व शांति के लिए मार्ग प्रशस्त किया। अतः निष्कषर्तः यह कहना उपयुक्त होगा कि नैतिकता और आध्यात्मिकता का राजनीति से पृथक्करण तो आवश्यक है परन्तु कोई भी राजनीति तब तक प्रासंगिक और लोककल्याणकारी तथा लोकतांत्रिक नही बन सकेगी जब तक वह सार्वभौम नैतिकता और आध्यात्मिकता के नियमों को न अपना ले। यह सिद्धान्त न केवल राष्ट्रीय राजनीति अपितु अतंर्राष्ट्रीय राजनीति दोनो के संदर्भ में प्रासंगिक है। अतः भारत पाक संबंध का निर्धारण करते समय दोनों राष्ट्रो का इस तथ्य को दृष्टिगत रखना आवश्यक है। यदि इनमें से किसी के द्वारा इस तथ्य की उपेक्षा की गयी हो भारत–पाक दूरस्थ पड़ोसी ही बने रहेंगे।

सन्दर्भ

1. Barker, op.cit. 99
2. Will Durant :Story of Philosopy, p. 20
3. Quoted by Sabine : op. cit., p. 84
4. Sabine, op. cit., p. 341
5. Maxey, op. cit., p. 132
6. Gandhi M.K. : My Experiments With Truth, p. 591
7. प्रो0 रामचंद्रन, जी0, ''द मान गाँधी'' नैपातिनकारा : माधवी मन्दिरम, 1983
8. अंनंथा, टी0 एस0, ''गाँधी हिन्द स्वराज : इट्स अपील टू मी'', नई दिल्ली, गाँधी पीस फाउंउेशन
9. http://www.merriam-webster.com/dictonary/ethic
10. http://www.bbc.co.uk/ethics/Introduction/Intro-1.shtm
11. 7th Major Rock Edict, Romila Thaper, op. cit,